Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: Dec 2, 2023
Matches: 0 / 2563 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code

“भाषाई भूमंडलीकरण और हिन्दी”

डॉ.- ब्रह्मविनोद शाश्वत

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग

जे. एस. विश्वविद्यालय शिकोहाबाद फिरोजाबाद

ई-मेल : vinodkumar29385@gmail.com

मो.न.. 9410834689

सारांश :

वैश्विक मानवता में ज्ञानात्मक संचार प्रारंभिक रूप से भाषा के आदिम स्वरूप से ही हुआ है। इस लिए भाषा मानव के विकास की सोपानी सीढी है। उसी पर आरुढ होकर आज
हम सब विवेकमयी विहार कर रहे हैं। इसी विहार को नित्य नूतन नव्य शाश्वत बनाये रखनेके लिए भाषा की वैश्विक यात्रा निरंतर गतिमान एवं कीर्तिमान है उसका भूमण्डली करण सम्पूर्ण जगत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है । वैश्विक क्षितिज पर भाषाकी प्रासांगिकता आज भी उतनी ही है जितनी स्रष्टि सृजन के प्रारंभिक काल में थी। इसप्रासांगिकता को तब और वल मिल जाता है जब भाषा को वैज्ञानिक प्रयोगशाला में ले जाकर व्याकरण शास्त्र साहित्य समाज सम्मत मानकत्व प्रदान कर उसका भूमण्डलीकरण कर दिया जाता है। इसी के परिणामस्वरूप भाषा को भाषा विज्ञान की संज्ञा से अबहित कर पूर्ण वैज्ञानिक परख पर खरा उतारकरउस की वैश्विक पहचान गहरी बनायीं जाती है, उसका प्रचार प्रसार व्यापक द्रुतगति से कियाजाता है , जा रहा है, और होता रहेगा। इसी श्रंखला को स्वीकार करते हुए आधुनिक भाषावैज्ञानिक भाषा की वैज्ञानिकता, एतिहासिकता , सामाजिकता , व्यापकता ,साहित्यिकता,नैतिकता ,कलात्मकता आदिआदि से उसकी विशुद्धता सिद्ध कर नित नई नूतन

प्रासांगकिद्रष्टि से देखते रहकर उसके भूमण्डलीकरण में निरंतर अपना योगदान देते रहते है l इसी देख परख में हिंदी को पूर्ण वैज्ञानिक भाषा स्वीकार किया गया है l जिसका नख-शिख तब से अब तक पूर्ण वैज्ञानिक और पूर्ण प्रासांगिक है इस के भूमण्डलीकरण की महती आवश्यकता प्रतीत हो रही है l इसी लिए वैश्विक पटल पर इसकी निरंतरता आज तीव्रता से गतिमान है , इसकी गति, व्यापकत्व,अपनत्व ,व्यवसायत्व , साहित्य सृजन के साथ मानकत्व पर द्रष्टि डालने की अतिमहती आवश्यकता है , क्योंकि कि वह पूर्ण प्रकृति स्वरूपा है जब कि अन्य सभी भाषाएँ, अप्राकृतिक,कृतिम है जो बहुत बाद में मानवों द्वारा गढ़ी जाती है l किसी में भी संस्कृतमयी हिंदी जैसावेग भावप्रवाह परिस्कार ध्वनि विन्यास ,वर्ण विन्यास, शब्द, पद बंध, वाक्य वर्तनी शुद्धता के साथ उच्चारणीय, श्रवणीय, लेखनीय , वाचनीय कौशल दक्षता व्याकरणमयी वैज्ञानिक शुद्धि दिखाई नहीं देती l केवल और केवल एक मात्र हिंदी ही इन सभी मानकों को पूरा कर आज वैश्विक क्षितिज पर गतिमान है इस गति को और गतिमान यह आधुनिक विज्ञान युग कर रहा है l निश्चित रूप से हिन्दी सार्वभौमिक गति से पुष्पित पल्लवित हो रही है और हम सब का भी यही परम कर्तव्य है कि इसे यूँही गतिमान बनाये रखे तभी हम भाषा की वैश्विक प्रासांगिकता को अक्षरसा प्राप्त कर बनाये रख पायेगें और तभी हिंदी का वास्तविक भूमण्डली करण हो सकेगा l इस के किये वैश्विक क्षितिज पर विश्व भाषा वैज्ञानिकों के शोधअनुसन्धान लेख प्रलेख साहित्य सृजन प्रयोग प्रचलन विकासोंमुखता ,निरंतरता के साथ सर्च इंजन खोज बीन विचार कथन चिंतन , प्रकाशन, व्यवसाय बाजारीकरण वैश्वीकरण औधोगीकरण को यथावत गहराई से समझ कर भूत, वर्तमान , भविष्य तक पहुचना है इसका यथावत उल्लेख इस लेख से स्पष्ट देखा पढा जा सकता है और भाषाई भूमण्डलीकरण में हिंदी की क्षमता की जाँच परख भली भांति समझी जा सकेगी ....

मुख्य शब्द- वैश्विक ,भाषाई ,भूमण्डलीकरण , स्रजन ,पटल ,गति, साहित्य , नूतन , वैज्ञानिक , मानक

प्रस्तावना – विश्व की सभी भाषाएँ सामान्यतया समता-विषमता मयी हैं परन्तु हिंदी के परिपेक्ष में ऐसा किंचित मात्र भी नही है कियोकि वह तो जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी ,पढ़ी जाती है जो उसकी सबसे बड़ी और प्रमुख वैज्ञानिकता है भले ही हम आज सम्पूर्ण भूमंडल पर और भी कई देशी-विदेशी भाषाएँ बहुमत में दिख रहीं हैं पर वो वास्तब में भाषाई भूमण्डली मानकत्वमय विशुद्ध वैज्ञानिक नहीं है | वही हिंदी कुछेक कठिनता का मानकत्वमय निराकरण कर पूर्ण एकरूपतामय है फिर भी हम उसे शब्द -भंडार ,शब्दकोष ,पारिभाषिक शब्द ,पर्यायवाची शब्द ,विपरीतार्थक शब्द ,एकार्थक शब्द ,अनेकार्थक शब्द ,श्रुतसिमभिन्नार्थक शब्द ,ध्वनी ,वर्ण ,शब्द ,वाक्य ,पद-बंध, आयाततिशब्द ,योगिक शब्द ,विकारी -अविकारी शब्दों के लिए अनेक बहानोंके साथ साथ मानक शब्द ,बोली शब्द ,कहावत आदि न जाने किसि

कसि के लिए हिंदी को कोशने का काम करते कराते रहकर उस की वैज्ञानकि परपुष्टता पर सवाल खडा कर देते हैं ये हमारी मूढ़ता नही तो क्या है जो नहीं है उसे मानलेते हैं | भूमण्डली भाषा वैज्ञानकिों का एकमतीय मानना है कि- हिंदी जैसी वपुिलशब्द सम्पदा ,साहत्यि स्रजन,भावसंचरण ,व्याकरण मतैक्य अन्य कसिी में न था ,न है ,न होगा | भारत भरतीयता और उसके भाषा साहत्यि के साथ हुआ वैश्वकि भूमण्डली दमन साक्षी है कि-यदि ये सब नहीं होता तो हर हाल में भारत और उसकी सांस्क्रतकि धरोहर उसकी भाषा ,वैश्वकि भूमण्डली शखिर से ह्रषति न होती ,वह तो गुरूत्व से ओत प्रोत थी, है और फरि शखिरोच्चता पा रही है | लेकनि हम आज हिंदी हन्दिू हदिुस्तान का नारा लगाकर शोर-सरावे में वदिेशी दौड लगाये जा रहे है और पा रहे है कि- इतने सरकारी संस्थागत व्यक्तगित सभी स्तरों पर परमिार्जन के प्रयासों के वाद भी वह धूमलि सी होती चली जा रही है वो भी स्वम के घर में बहुत ही वचिारणीय दशिा-दशा को वद्लने के लिए प्रो.रमेशचन्द्र महरोत्रा ने १९८८ के आस पास भरसक प्रयत्न प्रारम्भ कयिा जो वक्रिय प्रबन्धक अम्बरीश कुमार से होता हुआ प्रिंसिपिल चौ. छैलेश चन्द्र ,कुं.देवेन्द्र सहिं नागर ,पं. रजनीकांत ,प्रतभिा की धनी सुश्री दीप्ती मशि्र ,पं.सुभाषचन्द्र ओझा ,डॉ. पी.सी.शर्मा ,डॉ.रीता मशि्रा,श्री राम बचन जी तक से लेकर आज भी नरिंतर जारी है |

भूमण्डली भाषा उद्भव और वकिास के वभिन्नि मतों में से मुख्यतःसमन्वति वकिासवाद ,अनुकरणवाद ,प्रतीकवाद ,मनोभावाभव्यिंजकवाद , संकेत या इंगतिवाद ,संरचनावाद ,प्रयोगवाद ,प्रगतविाद ,उपयोगतिावाद ,नर्मितिवाद , सहयोगवाद ,भौतकिवाद ,समाजवाद ,प्रतक्रियािवाद ,सुत्रवाद ,चत्रिवाद आदिअनेको ने भाषा की भूमण्डली वकिास यात्रा को अपने-अपने तरीके से समझाया है लकिनि वैश्वकि हिंदी जगत इसके लिए आज भी अद्भुत अप्रतमि रहस्यमय माना जाता है | उसकी वकिास यात्रा नरिंतर अबाध गतसिे बढती जा रही है | सभी भारोपीय भाषाएँ धर्म, समाज,साहत्यि, कला संस्क्रतिकी धनी हैं उन में हिंदी का तो कहना ही क्या ? उसकी प्राचीनता ,गम्भीरता और वैज्ञानकिता अद्वतिीय है ।संसार का सबसे प्राचीन ग्रन्थ -ऋग्वेद भाषाई भूमण्डलीकरण की श्रंखला की नीव है ।वैश्वकि जगत को भाषकि अवबोधन यहीं से आरम्भ होता है ,जो नरिंतर ज्ञान ,वज्ञिानं, धर्म ,संस्क्रति,सम्बन्ध ,पदार्थ ,प्रतकि ,भाव ,वचिार ,रस छंद ,अलंकार,भाषा वशिषि्ट की चेतना वशि्व में जगाकर उस का भूमण्डलीकरण करता है ।प्राचीनकाल में वैदकि एवं लौककि संस्कृत लगभग २००० ई. पू. से १००० ई.पू.तक दो नाम प्रचलति थे जनिमें वेदों ,संहताओ,उपनषिदों ,शतपथ ,ब्राह्मणग्रंथों की रचना के वाद रामायण ,महाभारत ,गीता ,पुरानों की रचना हुई | ऐसेही धीरे धीरे भाषकि प्रवाह पाली ,प्राक्रत से होता हुआ शौरशेनी ,पैशाची ,मागधी ,और अपभ्रंश या अव्हट्ट तक आने से १००० ई.पू.तक दो नाम प्रचलति थे जनिमें वेदों ,संहताओ,उपनषिदों ,शतपथ ,ब्राह्मणग्रंथों की रचना के वाद रामायण ,महाभारत

,गीता ,पुरानों की रचना हुई | ऐसेही धीरे धीरे भाषकि प्रवाह पाली ,प्राक्रत से होता हुआ शौरशेनी ,पैशाची ,मागधी ,और अपभ्रंश या अव्हट्ट तक आने के वाद हिंदी का प्राचीनतम ढांचा निर्मित हो जाता है जो आधुनिककाल में प्राचीन हिंदी १०००से १४०० ई.तथा मध्यकालीन हिंदी १४०० से १८५० ई.तक और आधुनिक हिंदी १८५० ई.से अब तक की हिंदी के लिए प्रयुक्त होकर विस्तृत रूप में विकिराल रूप धारण करता चला जा रहा है |आज इसकी विरािटता पर द्रष्टपित करें तो हिंदी का भूमण्डली शिखर भारत ही नही अपितु भारतेतरवैश्विक भौगोलिक क्षेत्रों जैसे -मारिशिस ,फिजी ,सूरीनाम ,ट्रिडिनाड ,तजाकिस्तान ,उव्बेकिस्तान ,गयािना ,द. अफ्रीका ,अमेरिका ,न्यूयार्क के अलावा हांगकांग ,मलेशिया ,सिंगापूर आदि देशों में बहुतायत जो वैश्विक भूमंडल पर देशी भाषा ,रेखता ,आर्यभाषा ,खड़ीबोली ,भारती, नागरी, हिंदी ,उर्दू ,दखिनी हिंदी ,हिन्दुस्तानी ,हिन्दवी ,हिन्दुई ,आदि संज्ञाओं से विभूषित की जाती है जो विश्विभरके लिए एक प्रमुख भाषाई आकर्षक अजूबा है |चीनी के वाद विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में सबसे अधिक गतिमान हिंदी ही है | विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार हिंदी विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओँ में से एकमात्र भाषिक भूमण्डली महाशक्ति है |भारतीय जनगणना२०११ के अनुसार ४२ करोड़ २० लाख से अधिक लोगों ने मूल रूप से हिंदी को मात्रभाषा स्वीकार किया |भारत के लिए ही नही अपितु सम्पूर्ण भूमंडल के लिए आज हिंदी कितिनी महत्त्वपूर्ण है उदाह्रण के लिए “सैयुक्त राज्य अमेरिका में ८६३६७७९ ,मोरिशिस में ६८५१७० ,द.अफ्रीका में ८९०२९२ ,यमन में २३२७६०,युगांडा में १४७००० ,सिंगापूर में ५००० ,नेपाल में ८००००० ,जर्मनी में ३०००० हिंदी अपनाए हुए है वही न्यूजीलेंड में हिंदी चौथी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है| ” - 1

हिंदी भाषा व्याकरण व्यवस्था का सवसे अप्रतिम बिंदु स्वनिम है जो किसी वैश्विक भाषा के लिए अतिमहत्वपूर्ण है यह स्वनिम के रूप में संबंध स्वनिम ही है जो भाषा वैज्ञानिको के लिए आज भी अध्ययन ,विश्लेषण ,शोध, अनुशंधान का विषय है डॉ. भोला नाथ के अनुसार ‘स्वनिम किसी भाषा की अर्थभेद्क ,ध्वन्यात्मक इकाई है जिसमें अर्थ भेदकता के साथ साथ स्वनिम के निर्धारण में वितिरण का स्थान भी अत्यंत महत्वपूरण है |इसी लिए आज संगणक के लिए सबसे उपयुक्त भाषा संस्क्रतमय हिंदी को ही मान्यता प्राप्त है भले ही आज संगणकका प्रयोग हिंदीमय बहुत सीमित सा है| फिर भी आज इसका प्रचलन व्यापकता से बढ़ रहा है |डॉ.ओउम विकास ने नागरी को संगणक में सरलता से प्रयोग करने के प्रचार-प्रसार को गति प्रदान की है इसी क्रम में इ.सी.आई.एल.हैदरावाद की कम्पनी ने १९७७ में ही हिंदी में फोर्टान संगणक हिंदी भाषामें चलाया उसके वाद आई.आई. टी. कानपूर १९७८मेन डॉ.आर.एम्.के.सिन्हा का बहुत बड़ा सहयोग रहा वाद में विरिला विज्ञान और टेक्नोलोजी संस्थान पिलानी और डी.सी.एम्.दिल्ली ने मिलकर द्विभाषी संगणक सिद्दार्थ का निर्मन१९८० में किया | वही एप्पल ने

१९९७ में भारतीय भाषा किट के माध्यम से महान योगदान दिया |इसी के साथ मोटोरोला ने भी भरतीय भाषा हिंदी में पेजर टेक्नोलोजी साथ मानक आई.एस.सी.आई.आई.के अनुरूप आई.एस.एल.ए.पी.का विकास कर वैश्विक स्तर पर हिंदी का आदान -प्रदान प्रारम्भ कर दिया तभी १९९८ में दुनियां की सबसे बड़ी कम्पनी आई.बी.एम्.ने डॉस-6 का वैश्विक भूमण्डलीकरण कर हिंदी का प्रथम संस्करण बनाया जिससे हिंदी यंत्री करण की ओर दौंडती चली गयी आज का युग यंत्र का युग है जिसमें मन्त्र तन्त्र सब नगण्य है केवल यंत्र ही काम कर रहा है वो भी विज्ञानं के यंत्र मात्र इसलिए वर्तमान विज्ञानं युग की संज्ञा से जाना जाना अन्यथा न होगा उस में भी इंटरनेट की आपा – धापी चौतरफा द्रष्टिगोचर हो रही है जिस का असर मानव मात्र ही नही अपितु सम्पूर्ण भूमंडल ,प्रक्रति के कण-कण,पर देखा जा सकता है जिसकी वजह से भूमण्डली भाषात्मक तथ्य भी प्रभावित हो रहा है | वैश्विक भाषाई भूमण्डलीकरण पर नेट इसतरह हावी है कि सिब कुछ सम्भव ही सम्भव है असम्भव कुछ रहा ही नही जिससे भाषा का भूमण्डलीकरण अति परिपुष्ट होता चला जा रहा है |वैश्विक प्रकाशन के साथ साथ देवनागरी हिंदी का प्रचार-प्रसार वेगमय हो रहा है | आज हिंदी में विभिन्न समाचारपत्र- पत्रिकाओ का प्रकाशन के अलावा मुद्रण ,चित्रिण भी हो रहा है | उदाह्र्ण के लिए वैश्विक स्तरपर हंस, आजकल,नयाज्ञान उदय ,सह्रदय ,सहचर आदिआदि प्रतिपल हम सब को जगा रहीं है |इतना ही नही पुस्तको के प्रकाशन की भरमार है साथ ही आनलाइन फोरम एवं अन्य जानकारी का आदान प्रदान भी वैश्विक पटल पर देवनागरीहिंदी में अतिप्रचलित है |साथ ही साथ आनलाइन कक्षाएं ,परीक्षाएं ,संगोष्ठियाँ ,सभाएं,सम्मेलन भी वैश्विक पर बहुप्रचलित हैं |इससे वैश्विक भूमण्डलीकरण हिंदी का परिपुष्ट हो रहा है |ये देखते हुए राजभासा विभाग ने सूचना प्रोद्योगिकी को बढ़ावा देते हुए हिंदी सोफ्टवेयर विकसित कर सभी काम और आसान बना दिए है | आज लीला ,नायक आनलाइन भाषा प्रशिक्षण ,पाठ्यक्रम भी सब उपलब्ध है |वैश्विक पत्रों -प्रपत्रों का आदान प्रदान रूपानत्रण सब कुछ हो रहा है ,हिंदी का कम्प्यूटर के लिए प्रयोग एलैक्ट्रोंनिक कारपोरेशन आफ इंडिया हैरावाद द्वारा सवसे पहले किया गया लेकिन ,आज ४० से अधिक हिंदी के सोफ्टवेयर जैसे ,प्रकाशक ,श्री लिपि,आई लिपि,जिस्ट मात्रा ,अंकुर ,आकृति,अक्षर फोर विंडोज अनेको नये पोर्टल बाजार में उपलब्ध हैं और लगातार काम कर रहे हैं |आज हिंदी टंकण,फोंटकि से लेकर किबोर्ड लेआउट ,लिपियांत्र्ण तक हर ओर हिंदी कम से कम समय में सम्पूर्ण भूमंडल पर प्रभावी हो रही है |आज हम संगणक पर नजर डालें तो इंडिक आई.एम्ई इंस्टोल के साथ वे सारे कार्य यथोचित रूप से हो सकते हें जो रोमन या आंग्ल में हो रहे हैं | इसके साथ ही आउटलुक, जीमेल, याहू, रीडिफ़का प्रयोग भी कर सकते है ,वैश्विक संगणक जगत के बर्ड ,एक्सेल,पावर ,पॉइंट ,नोटपैड आदिसभी पर हिंदी का प्रयोग बहुतायत में तेजी से हो रहा है |ब्लोगिंग पर भी हिंदी का खूब प्रयोग हो रहा है | जिनको आज किसी भी स्तर पर हिंदी

टइप की वल्किुल जानकारी नही है बो भी धडल्ले से हिंदी को लखि पढ़ सुन कर उसे अंतर्राष्टीय जगत में प्रसांगकि वना रहे है | हिंदी इंटरनेट की दुनियां में २३ सतिम्बर १९९९ एक महाक्रान्ति लेन बाला दनि है इसी दनि हिंदी वेब दुनियां डॉट कोम का श्री गणेश हुआ आज यह भाषाई भूमण्डलीकरण के लिए संज्ञानात्मक प्रवेश द्वार है| वैश्वकि सतह पर पहली वार बी.बी.सी.लन्दन ,जर्मन के डॉमचे वाले ,याहू इण्डयिा और एमएसएन इण्डयिा ने हिंदी की वैश्वकि भूमण्डलीकरण की सामर्थको देख कर अनेको नये पोर्टल बनाकर शुरू कयिे जसिके परणिाम स्वरूप आज हिंदी के वैश्वकि ब्लॉग ,वेवसाइट पोर्टल सोशल मीडयिा के मंचो से हिंदी का भूमण्डलीकरण सा हो गया है | हिंदी के इस भूमण्डली करण को देखते हुए वश्वि भाषा वैज्ञानकिों की सलाह से वश्वि व्यापार भी हिंदी को अपना रहा है और मान रहा है की -भारत इंटरनेट और भारतीय भाषाऐभवषि्य में वश्वि अर्थ व्यवस्था की सोने की ईट की नीव वनेगी जो इस समय शत प्रतशित सद्धि हो रहा है |वर्तमान में बहुराष्ट्रीय कम्पनयिां अपना व्यापार भी वश्वकि भाषाई भूमण्डली करण वाली भाषा में ही करना चाहती हैं |आज देखते देखते वंडिोज २००० के साथ हिंदी यूनकिोड फोंट के आते ही हिंदी को इंटरनेटमयी हिंदी कहा जाने लगा जसिने हिंदी को नति नये पंख लगा कर उसे ऊँची से ऊँची उडान के लिए स्वतंत्र कर दयिा |हम देख रहे हैं की १९००से लेकर २०२१ तक १२१ वर्ष में हिंदी की व्यापकता गति१७५.५२ फीसदी पहुंचकर नरिंतर भूमण्डली हो गयी है जो अंग्रेजी की ३८०.७१ के वाद सबसे तेज गतविाली भाषा माना जाता है| हिंदी आज भूमण्डली स्तर पर मंदारनि ओए अंग्रेजी के वाद सवसे तेज और सबसे अधकि बोली जाने वाली तीसरी भाषा से ऊपर उठ रही है |हिंदी अब वर्तमान शीर्ष १० कारोवारी भूमण्डली भाषाओँ में अग्रगंय है गूगल पर १० लाख करोड़ पन्ने हिंदी में उपलब्ध हैं और ये रफ्तार लगातार ९४ प्रतशित की दर से गतमिान है दुनियां के १० शीर्ष अखवारों में शीर्ष ६ हिंदी भाषा में भाषाई अलंकर बन भूमंडल पर हिंदी का मान बढ़ा रहे हैं |आज हिंदी भारत के वाहर २६० से अधकि वि.वि.में पठन -पाठन के लिए प्रयोग की जा रही है |इतना ही नही २८ हजार से अधकि शक्षिण संस्थान हिंदी में शोध प्रबंध के साथ भूमण्डली पटल उसे प्रदान कर रहे हैं |हम आज जब गूगलबाबा पर खोजते हैं तो पाते है कि दुनियां में ६४.६ करोड़ हिंदी भाषी हिंदी की नव्य नूतन भूमण्डली स्थाईत्वमयी स्थति को उत्तरोत्तर स्वीकार कर रहे हैं |

नष्किर्ष –   अत: नष्किर्ष रूप से कहा जा सकता है कि- वैश्वकिभाषाई भूमण्डली करण और हिंदी भाषा अभन्नि है| इसलिए सम्पूर्ण भूमंडल पर हिंदी का चरमोत्कर्ष दैदीप्यमान हो रहा है इस में हम को कंचितिमात्र संदेह नही था न है न होगा| जसि तरह से भारत और भारतीयता सम्पूर्ण भूमंडल पर पूर्ण वैज्ञानकि सद्धि हो रहा है वैसेही भारत ही राष्ट्रभाषा सभी देशी वदिेशी भाषाओँ में पूर्ण वैज्ञानकि है |इस की समता कसिी से नही की जा सकती वह तो दव्यि नव्य शाश्वत सनातन है इसीलिए ऐसी सामां

और कहा| हिंदी सिर्फ हिंदी न होकर सकल भूमंडल के माथे की विन्दी है |

तथास्तु

जय हिन्द जय भारत

!|!

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 - हिंदी भाषा एवं साहित्य का इतिहास {प्रभात मिश्र } - प्रष्ठ -५

2-- मायाफोंटीक टूल ,चित्रलेखा ,अनुबाद ,आओ हिंदी पढ़ें ,

EXCLUDE CUSTOM MATCHES	OFF
EXCLUDE QUOTES	ON
EXCLUDE BIBLIOGRAPHY	ON